IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिहार में प्राकृतिक आपदा बाढ़ का दरभंगा जिले के सन्दर्भ में अवलोकन

Kanchan

Research Scholar

University Department of Economics

Lalit Naryan Mithila University, Darbhanga

Abstract **बाढ़ के कारण जिन नदियों के लिये आज शोक, अभिशाप आदि का व्यवहार किया जाता है, भारत में प्राचीन काल से अद्यतन नदियों की पूजा की जाती रही हैं। ये नदियों पृथ्वी पर प्राणियों का प्राण हैं। "भौतिकी राष्ट्रों की माताएं नदियाँ है और पर्वत पिता। पिता निश्चेष्ट, निर्बाध और चिंतामुक्त निर्झर पुरूष है। नदियाँ सचेष्ट, गतिशवित्त मुक्तिदायिनी एवं रसपती सरस्वती है। शून्य में स्वच्छंद विवरण करने वाले मेघ जब क्षितिज की शय्या पर हलचल मचाकर रिक्त हो जाते हैं तब माता पृथ्वी उस तेजोदीप्त जीवन-पुण्य को अपनी सरित्तंतुओं के द्वारा धारण करती है। ये सरितायें ही पृथ्वी में प्रजनन की गति तथा शक्ति भरती है। माता पृथ्वी के शरीर में शिराओं का काम ये सरितायें ही करती है जिससे धरित्री पर जड़-जंगन की सृष्टि निरंतर उभरती, चलती तथा मिटती रहती है।**

***Index Terms* - बाढ़, नदियाँए जीवन-पुण्यए पृथ्वी, प्राकृतिक, आपात्**

परिचय

बिहार की जलवायु को हिमालय पर्वत दक्षिणावर्ती प्रायद्वीप ग्रीष्मकालीन तूफान दक्षिणी-पश्चिम मानसून, कर्क रेखा तथा बंगाल की खाड़ी प्रमुख रूप से प्रभावित करता है यहाँ जादा, गर्मी तथा वर्षा-तीन प्रमुख ऋतु हैं। बिहार का उच्चतम तापमान 104 फारेनहाइट होता है। गाया सर्वाधिक भीषण गर्मी का स्थान हैं। बिहार में ग्रीष्म ऋतु मार्च से मध्य जून तक; वर्षा ऋतु म जून से मध्य अक्टूबर तक तथा शीत ऋतु नवम्बर से फरवरी तक है।

बिहार राज्य में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। पश्चिन चम्पारणं का उत्तरी क्षेत्र में पर्वत पर्वतीय मिट्टी है जो वनोत्पाद के लिये उपयोगी है। प. चम्पारण अररिया तथा किशनगंज की निट्टियाँ तराई निट्टी है जहाँ धान गना पटसन आदि की उपज होती है। पूर्वी चम्पारण तथा सारणा की खादर |मिट्टी है। जहाँ धान, गेहूँ और गन्ना होती है। साथ ही दरभंगा पूर्तियों एवं मुजफ्फपुर में भी खादर मिट्टी है। पटना, गया, रोहतास तथा ढुंगेर में बांगड़ मिट्टी है जहाँ धान, अरहर, ज्वार-बाजरा होता है। सारण, पूर्णिया, दरभंगा त्या सहरसा में बालसुन्दरी मिट्टी हैं, जहाँ धान, गेहूँ, गन्ना, मका तथा तुम्बाळू होता |है। पटना बाढ़ मुंगेर भागलपुर में ताल मिट्टी है, जहाँ तिलहन, दहलन होता है। कैमूर क्षेत्र में बलथर मिट्टी हैं जहाँ ज्वार, बाजरा तथा अन्हर होता है। कैनुर |तथा रोहतास में लाल बलुई मिट्टी भी है, जहाँ मोटा अनाज होता है। क्षेत्र भी अत्यधिक बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है। और यहाँ बाढ़ के कारण अर्थव्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचता है। दरभंगा में व्याघ्रवती (बागमती) मथा कमला द्वारा 1884 में इतनी बड़ी तबाही हुई कि सरकारी कचहरियाँ दरभंगा से हटाकर लहेरियासराय ले जाना पड़ा। इस नदी की 1893-94 ई. वाली बाढ़ में भी सम्पूर्ण दरभंगा नगर जलमग्न हो गया था। पुनः 1954, 1975, 1979, 1987, 2002, 2007 आदि वर्षों में बाढ़ के ताण्डव नृत्य का प्रभाव दरभंगा जिला वाले तटबन्ध बनने के बाद टूटने लगते हैं और तबाही मचाने लगती है। केवल 1987 में 106 स्थानों पर तटबन्ध टूटे थे।

शोध-समस्या :

बिहार में विशेषकर उतरी विहार में बाढ़ एक समस्यामूलक चिरपरिचित व्यावहारिक शब्द बन गया है। ऐसे समस्यामूलक तथ्यों पर अबतक. व्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से विचार नहीं किया गया है। कुछ छिपपुट प्रयास इस दिशा में किये गये हैं, जो पर्याप्त नहीं कहे जायेंगे। बाढ़ की समस्या से आजतक विहार को निदान नहीं मिला। इसका व्यवस्थित एवं समाधानमूलक विश्लेषण वर्तमान में अवस्थित कर तथा इसके स्वरूप को ध्यान में रखकर वास्तविक तथ्यों को प्रकाश में लाया जाय। इस सम्बन्ध में जो सरकारी प्रसास बाढ़ नियंत्रण के लिये किये गये हैं। वे क्यों नहीं अबतक सफल हुये हैं, इस पर भी विचार करते हुये उस बात पर भी गंभीरता से विचार करना है कि बाढ़ का आज बाढ़ का वरदान स्वरूप क्यों लुप्त हो गया और आज उसका स्वरूप अभिशाप बन कर क्यों रह गया है?।

तदुपरान्त बाढ़ नियंत्रण के सरकारी प्रयासों की समीक्षा कर उनकी त्रुटियों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जायेगा और बाढ़ समस्या के निदान के लिये एक मास्टर प्लान की आवश्यकता है ताकि बाढ़ का अभिशाप रूप लुप्त होकर वरदान स्वरूप में दिखाई पड़े। मैं आशा करती हूँ कि मेरे द्वारा उपस्थापित संभावित मास्टर प्लान को ध्यान में रखकर जो योजना प्रस्तुत किये जायेगे वे निश्चित रूप से इसके निदान के लिये रामवाण साबित होंगे।

इस विषय पर अबतक जो भी शोधादि हुये हैं वे संतोषजनक नहीं है क्योंकि बिना मास्टर प्लान को ध्यान में रखकर बाढ़ समस्या पर जो सुझाव दिये गये हैं उनमें समग्र विचार मूलक तथ्यों का अभाव है। इतना ही नहीं, पत्र-पत्रिकाओं एवं सरकारी योजनाआ के अन्तर्गत जो सुझाव या विचार आये हैं वे भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि उसमें बाढ़ समस्या पर निदान हेतु अल्पकालीन तथ्यों पर ही विचार किया गया है। इस समस्या के निदान हेतु दीर्घकालीन उपायों पर सरकारी तौर पर ठोस विचार नहीं किया गया है। यदि आंशिक तौर पर भी कभी विचार किया गया होता तो उनका कार्यान्वियन अबतक सही रूप में नहीं हो सका है जिसके कारण उत्तर बिहार में विशषेकर दरभंगा जिला के लिये बाढ़ एक अभिशाप बन कर रह गयी है।

अध्ययन का उद्देश्य. :

मैं चूंकि बाढ़ग्रस्त क्षेत्र की रहनेवाली हूँ, अतएव बाढ़ की समस्या से जन्म से लेकर अबतक रू-ब-रू होती आ रही हूँ तथा मैंने अनुभव किया कि बाढ़ से इन दिनों लाम की जगह हानियाँ ही अधिक हो रही है। मैं समझती हूँ कि बाढ़ की समस्याओं पर स्थायी निदान के तकनौको पर गंभीरतापूर्वक विचार कर उपाय निकालना आवश्यक है। कारण, बात समस्या का अल्पकालीन सुधार का उपाय अपर्याप्त ही नहीं अन्त र्थ ही सामने आये हैं। बाल के कारण केवल मानव एवं पशु ही नहीं संकट में फैसते है परन् यातायात के साधन, विद्युत संचार सेवा, सार्वजनिक सम्पतियाँ आदि को बाद में विनाश के बाद इसके पुनर्निर्माण में प्रत्येक वर्ष भारी व्यय करनी पड़ती है। इस संदर्भ में पर्यावरण इंजीनियरों, बाढ़ क्षेत्र के भुक्तभोगी लोगों, समाजसेवियों, प्रशासन आदि को मिलजुल कर गंभीरता से विचार करना चाहिये कि बाढ़ की समस्या के निदान के लिये 'क्या स्थायी समाधान का उपाय निकाला जा सकता है?' इस संदर्भ में मैं विषय-वस्तु के अन्तर्गत इस पर प्रकाश डालूँगी। बिहार में बाढ़ का नियंत्रण अन्तर्राष्ट्रीय एवं अन्तर्राज्यीय समस्या का रूप भी लेती है, क्योंकि बिहार की सभी प्रमुख नदियाँ गंगा को छोड़कर नेपाल से आती है। महानन्दा नदी तो नेपाल, बिहार तथा बंगलादेश से भी गुजरती है। अतएव नेपाल को भी विश्वास में लेना होगा।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। जल प्रबंधन का कार्य यहाँ इस यप में करना होगा कि बाढ़ के पानी से कृषि कार्य भी सालों पर चलता रहे। इसके लिये नेपाल से बात कर एवं उस पर अपना प्रभाव डालकर नेपाल को भी भागीदारी बनाने की आवश्यकता दृढ़ इच्छा शक्ति से है, क्योंकि कृषि क्षेत्र के लिये जल प्रबंधन के सही कार्य उपयोग पर सोचा जाय तो वैसी स्थिति में बाढ़ अभिशाप नहीं वरदान सिद्ध होगी। बाढ़ समस्या के समाधान के लिये मैं अल्पकालीन उपायों का विरोधी नहीं है परन्तु उसकी एक सीमा है। साथ ही नदियों की निदानुदिन जो स्थिति हो रही है बाढ़ नियंत्रण के लिये अल्पकालीन उपाय असफल हो रहे हैं।

बाढ़ के कारण बड़े पैमाने पर राहत सामग्री पर अलग खर्च होता है। राहत सामग्री के वितरण में नीचे से ऊपर तक भ्रष्टाचारिता व्याप्त है। बिचौलियो द्वारा राहत सामग्रियों को खाने-पीने का साधन बनाया जाता है। अतएव प्रशासन को सोचने की आवश्यकता है कि लाभार्थियों को सीधे | राहत सामग्रियों को उपलब्ध करायी जाय। यदि बाढ़ राहत योजना राशि | सीधे पंचायत या गाँव को समय से पूर्व पहुँचा दी जाती है तो क्या बाढ़ पीड़ितों को समय से पूर्व राहत योजना राशि नहीं प्राप्त हो सकेगी? बाढ़ के नाम पर तटबंध आदि मरम्मत के नाम पर अलग भ्रष्टाचारिता है। बाढ़ के | नाम पर कहीं-कहीं यह भी देखने को मिला है कि तटबंध का मरम्मत हुआ ही नहीं, अथवा आंशिक रूप से हुआ और मरम्मत राशि पूरा उठा लिया गया, इसके कारण भी बाढ़ से

क्षतियाँ होती रही है। लगता है कि मानवता का पतन हो गया है और "बाढ़ों पर लाशों की राजनीति' ही हो रही है। इस पर किसी कवि ने सच ही कहा है," हे मेरे भगवान बता दो, दुनियाँ किस ओर जा रही है?" मैं समझती हूँ कि सरकार की मंशा साफ हो और लोगों का भी नैतिक पतन न हो तो क्या राहत सामग्रियों का शत-प्रतिशत अंश लाभार्थियों तक नहीं पहुँचाया जा सकता है? उतर होगा "हाँ"।

विषय की महत्ता :

उत्तरी बिहार विशेषकर दरभंगा जिला का विकास बाढ़ जैसे | अभिशाप के निदान पर निर्भर करता है, क्योंकि बाढ़ का दंश इस क्षेत्र के निवासियों को प्रत्येक वर्ष झोलना पड़ता है। इस क्षेत्र में बाढ़ की विभीषिका दो-तीन महिने तक ही दिखाई पड़ती है परन्तु इसका आंतरिक प्रभाव सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र पर सालों भर रहता है। दरभंगा जिला में भी बाढ़ से अपार क्षति होती है। यह जिला कृषि प्रधान जिला है और यहाँ के लोग मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। यहाँ के किसानों को 'बाढ़' 'प्रत्येक वर्ष अन्य क्षतियों के साथ आहार भी छीन कर ले जाता है। यदि दरभंगा को बाढ़ से स्थायी निदान मिल जाय तो यहाँ कृषि आधारित उद्योगों की भी काफी संभावना है। सरकार की दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में दरभंगा की चीनी मिलें तथा वृहद् उद्योग "अशोक पेपर मिल" में उत्पादन बंद है। बाढ़-समस्या के निदान के बाद न तो दरभंगा में अनाजों मी कमी रहेगी और न कृषि आधारित उद्योगों के लिये कच्चा माल का अभाव रहेगा। इसी प्रकार यदि संपूर्ण बिहार में बाढ़ का स्थायी निदान निकल जाता है तो बिहार के विकास में अधिक समय नहीं | लगेगा। अतएव मेरा मानना है कि बाढ़ समस्या का निदान यदि जल प्रबंधन के रूप में किया जाता है तो उत्तरी बिहार में चतुर्थिक खुखहाली छा जायेगी।

अध्ययन पद्धति :

मेरा यह शोध-प्रबन्ध मुख्य रूप से प्राथमिक गणना पद्धति पर आधारित है जिसमें बाढ़ क्षेत्रों का सर्वेक्षण एवं बाढ़ पीड़ितों से प्रश्नावली के आधार पर जानकारी प्राप्त कर विषय का विश्लेषण करना। साथ ही बाढ़ की पूर्व विभीषिकाओं एवं नियंत्रण हेतु जो उपाय किये गये हैं उसकी समीक्षा हेतु समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों, सरकारी योजनाओं का विश्लेषण एवं सुझावों का मूल्यांकन द्वितीय गणना पद्धति के आधार पर किया गया है जिसमें विभिन्न विद्वानों, विचारों एवं कृतियों का सहारा लिया गया है।

परिकल्पना :

मेरे शोध-प्रबंध की परिकल्पना यह है कि बाढ़ समस्या को जल-प्रबंधन के माध्यम से स्थायी रूप से नियंत्रित ही नहीं किया जा सकता, वरन् जल प्रबंधन से कृषि उद्योग आदि को सुचारूरूप से संचालित भी किया जा सकता है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में जान-माल एवं अन्य क्षतियों को रोका जा सकता है यदि बाढ़ नियंत्रण के वैज्ञानिक एवं नयी तकनीकों पर गंभीरता के विचार करने के साथ ही बाढ़ नियंत्रण की नीति से बाढ़ के सम्बन्ध में बड़े-बुजुर्गों की अनुभव जन्य विचारों एवं लोकोक्तियों को भी जोड़ा जाय- "आयल वलान बढ़ल दलान" "सुखले मरव बाढ़े जीअब" | पानी कहता है, "मेरा रास्ता मत रोको नहीं तो मैं विनाश कर दूंगा," आदि।

संदर्भ-सूची :

1. बिहार की नदियाँ- श्री हवलदार त्रिपाठी, प्रकाशक-बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रथम संस्करण, प्रथम खंड, मई 1977. पृ.सं.-5.
2. भारत-2010 (वार्षिक संदर्भ ग्रंथ) 54 वाँ संस्करण, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृ. 1061.
3. बिहार इनसाइट-1/2004, पृ.सं.-167, प्रकाशक-सामाजिक शैक्षणिक |
4. विकास केन्द्र, (एस.एस.बी.के.), पटना। भारत-2010, 54 वाँ संस्करण, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण
5. मंत्रालय भारत सरकार, पृ. 1.
6. हिन्दुस्तान एवं प्रभात खबर, मुजफ्फरपुर, 01.04.2011.
7. भारत-2010, भारत सरकार, प्रकाशन विभाग, गवेषणा, संदर्भ और प्रशिक्षण प्रभाग, पृ.-3.
8. राजपाल हिन्दी शब्द कोष, डा. हरिदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पृ.-758...
9. मिथिला का इतिहास - डा. रामप्रकाश शर्मा, पृ.-8, के.एस.डी. संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)
10. बिहार की नदियाँ, श्री हवलदार त्रिपाठी, प्रकाशक-बिहार हिन्दी ग्रंथ *अकादमी, पटना, 1977. पृ. सं.-121.*
11. *श्रीमदभागवद्गीता, अ.-10, श्लो.-31.*
12. *वराह पुराण, अध्याय - 82.*
13. *कुर्म पुराण, 1/39/8.*
14. *मनुस्मृति, अ.-8, श्लो.-92...*
15. पद्मपुराण, सृष्टि खंड, 94/53.
16. नारदीय पुराण, उत्तर खंड, अध्याय - 43.